चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27.3.26	5	1-4

एचएयू में भारतीय शिक्षण मंडल का राज्य स्तरीय 57वां स्थापना दिवस समारोह

शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, राष्ट्र निर्माण की आधारशिला : प्रताप सिंह

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय शिक्षण मंडल के संयुक्त तत्वावधान में 57वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय द्दविकसित भारत- रामत्व आधारित शिक्षाद्द रहा, जिसमें शिक्षा, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न आयामों पर गहन विचार-विमर्श हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के प्रान्त संघचालक प्रताप सिंह, मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद जोशी रहें, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने की।

प्रताप सिंह ने कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। उन्होंने कहा कि हमारी परंपरागत शिक्षा पद्धति जीवन मूल्यों पर आधारित थी, जिसे पुन: स्थापित करने की आवश्यकता है।

हकृवि में भारतीय शिक्षण मंडल के कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन करते अतिथिगण व अन्य।

भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ें हमारी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिक दृष्टि में निहित : डॉ. जोशी

मुख्य वक्ता डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ें हमारी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिक दृष्टि में गहराई से निहित हैं। उन्होंने रामत्व आधारित शिक्षा को केवल एक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र पद्धति बताया, जो व्यक्ति के भीतर नैतिकता, अनुशासन, कर्तव्यबोध, समरसता और संवेदनशीलता का विकास करती है। उन्होंने कहा कि आज की शिक्षा व्यवस्था को केवल डिग्री और रोजगार तक सीमित करने के बजाय, उसे जीवन के व्यापक उद्देश्यों से जोडना अत्यंत आवश्यक है। कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने समाज में बढ़ती असमानताओं और संवेदनहीनता पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें पुन: सामाजिक समरसता और सहयोग की भावना को सुदृढ़ करना होगा। उन्होंने कहा कि जीवन जीने और जीवन काटने के अंतर को समझाते हुए हमें अपने जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाना चाहिए।

कार्यक्रम में ये रहे उपस्थित

भारतीय शिक्षण मंडल की प्रान्त उपाध्यक्ष प्रो. लवलीन मोहन ने कार्यक्रम में धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच संचालन जीजेयू के प्राध्यापक प्रो. कर्मपाल ने किया। इस अवसर पर उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री गणपति तेती, विभाग संघ चालक पवन जिंदल, जिला सह कार्यवाह चंद्रशेखर, लुवास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार, जीजेयू के कुलपति प्रो. नरसीराम बिश्नोई, एमएचयू के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा, सीडीएलयू के कुलपति प्रो. विजय कुमार सहित अनेक शिक्षाविद, अधिकारी एवं शोद्यार्थी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27.3.26	3	1-4

'मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा व सेवा भाव का प्रतीक है रामत्व'

पुस्तिका का विमोचन करते हुए • विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय शिक्षण मंडल (हरियाणा प्रांत) के संयुक्त तत्वावधान में 57वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय विकसित भारत-रामत्व आधारित शिक्षा रहा, जिसमें शिक्षा, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न आयामों पर गहन विचार-विमर्श हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के प्रान्त संघचालक प्रताप सिंह, मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय अध्यक्ष डा. सच्चिदानंद जोशी रहें जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने की।

मंच पर भारतीय शिक्षण मंडल के प्रान्त अध्यक्ष डा. जितेन्द्र भारद्वाज भी मौजूद रहें। मुख्य अतिथि प्रताप सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। उन्होंने रामत्व को सत्य, मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा भाव का प्रतीक बताते हुए कहा कि यदि शिक्षा इन मूल्यों पर आधारित हो तो भारत को विकसित राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता। मुख्य वक्ता डा. सच्चिदानंद जोशी ने अपने विस्तृत उद्बोधन में कहा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ें हमारी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिक दृष्टि में गहराई से निहित हैं। उउन्होंने कहा कि आज की शिक्षा व्यवस्था को केवल डिग्री और रोजगार तक सीमित करने के बजाय, उसे जीवन के व्यापक उद्देश्यों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों के माध्यम से किसानों व विद्यार्थियों के हित में निरंतर कार्य कर रहा है। इस अवसर पर लुवास कुलपति प्रो. विनोद कुमार, जीजेयू कुलपति प्रो. नरसीराम बिश्नोई, एमएचयू के कुलपति डा. सुरेश मल्होत्रा, सीडीएलयू के कुलपति प्रो. विजय कुमार, डा. जितेंद्र भारद्वाज, प्रो. लवलीन मोहन, प्रो. कर्मपाल, गणपति तेती, पवन जिंदल, चंद्रशेखर मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	27.3.26		

शिक्षा

एचएयू में भारतीय शिक्षण मंडल का 57वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित

शिक्षा राष्ट्र निर्माण की आधारशिला : प्रताप सिंह

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय शिक्षण मंडल (हरियाणा प्रांत) के संयुक्त तत्वावधान में 57वां स्थापना दिवस मनाया गया। विकसित भारत - रामत्व आधारित शिक्षा पर आधारित इस कार्यक्रम में शिक्षा, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न आयामों पर विचार विमर्श हुआ। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक प्रताप सिंह ने कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है।

उन्होंने रामत्व को सत्य, मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा भाव का प्रतीक बताते हुए कहा कि यदि शिक्षा इन मूल्यों पर आधारित हो तो भारत को विकसित राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि आज के समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना ही नहीं बल्कि एक जिम्मेदार, संवेदनशील और राष्ट्रसमर्पित नागरिक का निर्माण करना भी होना चाहिए। मुख्य वक्ता डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ें हमारी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिक दृष्टि में गहराई से निहित हैं।

एचएयू में पुस्तिका का विमोचन करते मुख्य अतिथि व अन्य। स्रोत : आयोजक

एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों के माध्यम से किसानों और विद्यार्थियों के हित में निरंतर कार्य कर रहा है और देश-प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। प्रांत अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र भारद्वाज ने कहा कि रामनवमी के पावन अवसर पर स्थापित भारतीय शिक्षण मंडल शिक्षा के क्षेत्र में भारतीयता को स्थापित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। इस अवसर पर पुस्तक का विमोचन भी किया गया। भारतीय शिक्षण मंडल की प्रांत उपाध्यक्ष प्रो. लवलीन मोहन ने कार्यक्रम में धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। मंच संचालन जीजेयू के प्राध्यापक प्रो. कर्मपाल ने किया। इस अवसर पर उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री गणपति तेती, विभाग संघ चालक पवन जिंदल, जिला सह कार्यवाह चंद्रशेखर, लुवास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार, जीजेयू के कुलपति प्रो. नरसीराम बिश्नोई, एमएचयू के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा, सीडीएलयू के कुलपति प्रो. विजय कुमार सहित अनेक शिक्षाविद, अधिकारी एवं शोद्यार्थी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	27.3.26	12	1-4

विकसित भारत के लिए 'रामत्व आधारित शिक्षा' जरूरी: प्रताप सिंह

हकृवि में भारतीय शिक्षण मंडल का राज्य स्तरीय 57 वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित

हिसार, 26 मार्च (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय शिक्षण मंडल (हरियाणा प्रांत) के संयुक्त तत्वावधान में 57 वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय ट्रविकसित भारत-रामत्व आधारित शिक्षाट्र रहा, जिसमें शिक्षा, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न आयामों पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के प्रान्त संघचालक प्रताप सिंह, मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद जोशी रहें जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने की। मंच पर भारतीय शिक्षण मंडल के प्रान्त अध्यक्ष डॉ जितेन्द्र भरद्वाज भी मौजूद रहें।

मुख्य अतिथि प्रताप सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। उन्होंने रामत्व को सत्य, मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा भाव का प्रतीक बताते हुए कहा कि यदि शिक्षा इन मूल्यों पर आधारित हो तो भारत को विकसित राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता।

उन्होंने कहा कि आज के समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार, संवेदनशील और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक का निर्माण करना भी होना चाहिए। उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारी परंपरागत शिक्षा पद्धति जीवन मूल्यों पर आधारित थी, जिसे पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि वे आत्मानुशासन, कर्तव्यपरायणता और सेवा भावना को अपने जीवन में अपनाएं तथा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान दें।

मुख्य अतिथि के साथ अन्य उपस्थित अतिथिगण व कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए वक्ता।

रामत्व आधारित शिक्षा से विश्व का नेतृत्व कर सकता है भारत: डॉ. सच्चिदानंद जोशी

मुख्य वक्ता डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने अपने विस्तृत उद्बोधन में कहा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ें हमारी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिक दृष्टि में गहराई से निहित हैं। उन्होंने रामत्व आधारित शिक्षा को केवल एक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र पद्धति बताया, जो व्यक्ति के भीतर नैतिकता, अनुशासन, कर्तव्यबोध, समरसता और संवेदनशीलता का विकास करती है। उन्होंने कहा कि आज की शिक्षा व्यवस्था को केवल डिग्री और रोजगार तक सीमित करने के बजाय, उसे जीवन के व्यापक उद्देश्यों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि श्रीराम का जीवन दर्शन हमें सिखाता है कि समाज के प्रत्येक वर्ग का सम्मान करते हुए समावेशी विकास ही सच्चे अर्थों में राष्ट्र निर्माण का आधार बन सकता है।

उन्होंने पंच परिवर्तन की अवधारणा को विस्तार से समझाते हुए कहा कि व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन लाकर ही विकसित भारत के सपने को साकार किया जा सकता है।

उन्होनें कहा कि रामत्व आधारित शिक्षा से भारत विश्व का नेतृत्व कर सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि शिक्षा में भारतीयता और नैतिकता का समावेश किया जाए, तो भारत विश्व का मार्गदर्शक बन सकता है।

विकसित भारत के सपने को साकार करना हम सब की जिम्मेदारी: प्रो. बलदेव राज काम्बोज

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों के माध्यम से किसानों और विद्यार्थियों के हित में निरंतर कार्य कर रहा है और देश-प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने समाज में बढ़ती असमानताओं और संवेदनहीनता पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें पुनः सामाजिक समरसता और सहयोग की भावना को सुदृढ़ करना होगा। उन्होंने कहा कि जीवन जीने और जीवन काटने के अंतर को समझाते हुए हमें अपने जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाना चाहिए तथा विद्यार्थियों को केवल कुशल पैशेवर ही नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनाने पर भी ध्यान देना चाहिए। उन्होनें यह भी कहा की 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करना हम सब की जिम्मेदारी है।

प्रांत अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र भारद्वाज ने कहा कि रामनवमी के पावन अवसर पर स्थापित भारतीय शिक्षण मंडल शिक्षा के क्षेत्र में भारतीयता को स्थापित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। उन्होंने सभी शिक्षाविदों और विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपनी जड़ों से जुड़े रहें और भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा पर गर्व करें।

भारतीय शिक्षण मंडल की प्रान्त उपाध्यक्ष प्रो. लवलीन मोहन ने कार्यक्रम में धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर शिक्षण ज्ञान पर आधारित प्रदर्शनी भी लगाई गई तथा पुस्तक का विमोचन भी किया गया। मंच संचालन जीजेयू के प्राध्यापक प्रो. कर्मपाल ने किया। इस अवसर पर उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री गणपति, विभाग संघ चालक पवन जिंदल, जिला सह कार्यवाह चंद्रशेखर, लुवास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार, गुजवि के कुलपति प्रो. नरसीराम बिश्नोई, एम.एच.यू. के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा, सी.डी.एल.यू. के कुलपति प्रो. विजय कुमार सहित अनेक शिक्षाविद, अधिकारी एवं शोद्यार्थी उपस्थित रहें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	27.3.26		

हकृवि में भारतीय शिक्षण मंडल का राज्य स्तरीय 57 वां स्थापना दिवस समारोह

'रामत्व आधारित शिक्षा' से ही विकसित होगा देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय शिक्षण मंडल (हरियाणा प्रांत) के संयुक्त तत्वावधान में 57वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय विकसित भारत - रामत्व आधारित शिक्षा रहा, जिसमें शिक्षा, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न आयामों पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त संघचालक प्रताप सिंह, मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद जोशी रहें जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने की। मंच पर भारतीय शिक्षण मंडल के प्रान्त अध्यक्ष डॉ जितेन्द्र भरद्वाज भी मौजूद रहें।

मुख्य अतिथि प्रताप सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। उन्होंने रामत्व को सत्य, मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा भाव का प्रतीक बताते हुए कहा कि यदि शिक्षा इन मूल्यों पर आधारित हो तो भारत को विकसित राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता।

इस अवसर पर उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री गणपति तेती, विभाग संघ चालक पवन जिंदल, जिला सह कार्यवाह चंद्रशेखर, लुवास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार, गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसीराम बिश्नोई, एमएचयू के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा, सीडीएलयू के कुलपति प्रो. विजय कुमार सहित अनेक शिक्षाविद, अधिकारी एवं शोद्यार्थी मौजूद रहे।

हिसार। पुस्तिका का विमोचन करते अतिथिगण। फोटो: हरिभूमि

विकसित भारत के सपने को साकार करना हम सबकी जिम्मेदारी: प्रो. काम्बोज

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों के माध्यम से किसानों और विद्यार्थियों के हित में निरंतर कार्य कर रहा है और देश-प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने समाज में बढ़ती असमानताओं और संवेदनहीनता पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें पुनः सामाजिक समरसता और सहयोग की भावना को सुदृढ़ करना होगा। उन्होंने कहा कि जीवन जीने और जीवन काटने के अंतर को समझाते हुए हमें अपने जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाना चाहिए तथा विद्यार्थियों को केवल कुशल पेशेवर ही नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनाने पर भी ध्यान देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा की 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करना हम सब की जिम्मेदारी है। भारतीय शिक्षण मंडल की प्रान्त उपाध्यक्ष प्रो. लवलीन मोहन ने कार्यक्रम में धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर शिक्षण ह्रास पर आधारित प्रदर्शनी भी लगाई गई तथा पुस्तक का विमोचन भी किया गया। मंच संचालन जीजेयू के प्राध्यापक प्रो. कर्मपाल ने किया।

रामत्व आधारित शिक्षा से विश्व का नेतृत्व कर सकता है भारत: डॉ. जोशी

मुख्य वक्ता डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने अपने विस्तृत उद्बोधन में कहा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ें हमारी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिक दृष्टि में गहराई से निहित हैं। उन्होंने रामत्व आधारित शिक्षा को केवल एक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र पद्धति बताया, जो व्यक्ति के भीतर नैतिकता, अनुशासन, कर्तव्यबोध, समरसता और संवेदनशीलता का विकास करती है। उन्होंने कहा कि आज की शिक्षा व्यवस्था को केवल डिग्री और रोजगार तक सीमित करने के बजाय, उसे जीवन के व्यापक उद्देश्यों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि श्रीराम का जीवन दर्शन हमें सिखाता है कि समाज के प्रत्येक वर्ग का सम्मान करते हुए समावेशी विकास ही सच्चे अर्थों में राष्ट्र निर्माण का आधार बन सकता है।